सुत्त-सार

(अङ्गुत्तरनिकाय एवं खुद्दकनिकाय)

तृतीय भाग

सत्येंद्र नाथ टंडन

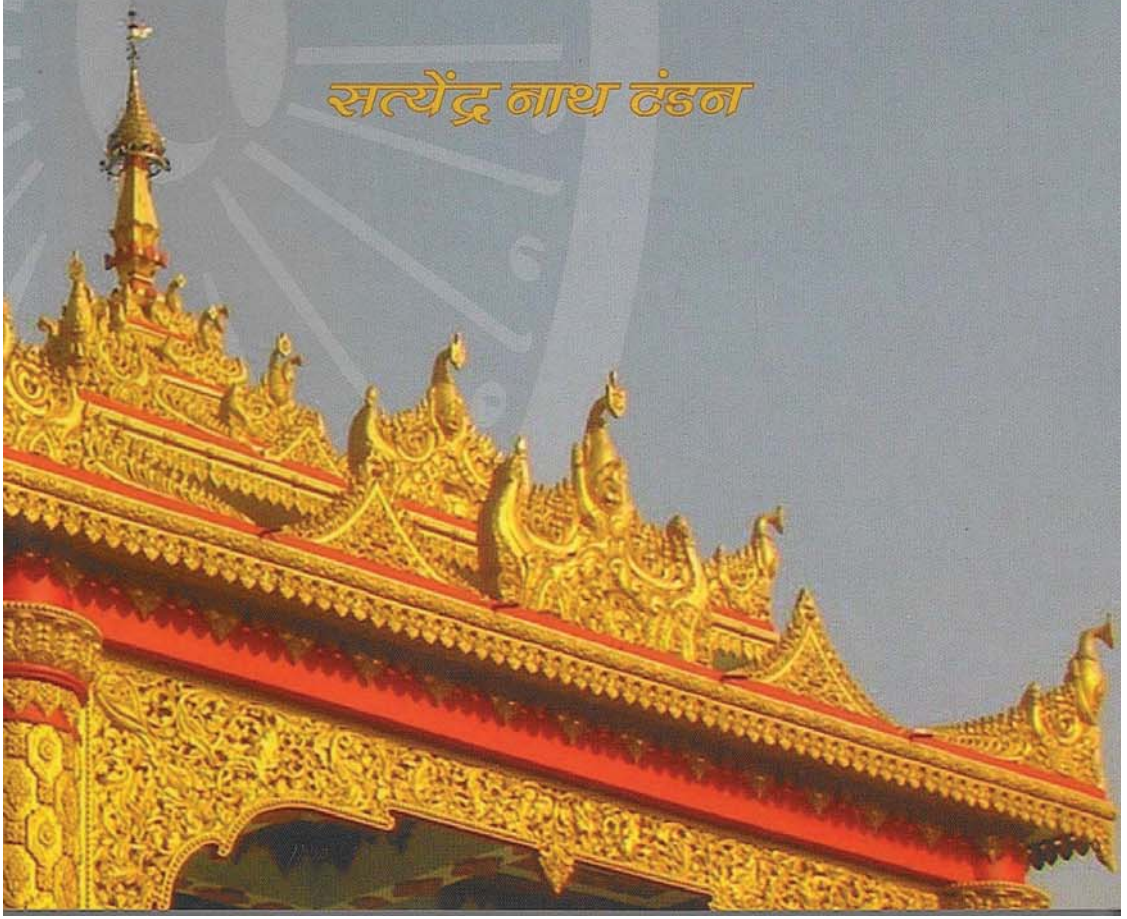

सुत्त-सार

(अङ्गुत्तरनिकाय एवं खुद्दकनिकाय)

(तृतीय भाग)

सत्येंद्र नाथ टंडन

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

सुत्त-सार

(तृतीय भाग)

विषय-सूची

भूमिका ..... **xi**

अङ्गुत्तरनिकाय **१**

पहला निपात १

दूसरा निपात.....३

तीसरा निपात.....६

चौथा निपात १२

पांचवां निपात १८

छठा निपात २३

सातवां निपात २५

आठवां निपात.....२९

नौवां निपात ३२

दसवां निपात.....३४

ग्यारहवां निपात ३७

खुद्दकनिकाय **४०**

खुद्दकपाठ.....४०

धम्मपद ४२

उदान ४६

इतिवुत्तक ५०

पहला निपात ·····५०
दूसरा निपात ·····५०
तीसरा निपात ·····५१
चौथा निपात ·····५२
सुत्तनिपात·····५४
१. उरगवग्ग ·····५४
२. चूळवग्ग·····५५
३. महावग्ग·····५६
४. अट्ठकवग्ग ·····५७
५. पारायनवग्ग·····५८
विमानवत्थु ·····६०
पेतवत्थु ·····६२
थेरगाथा·····६५
थेरीगाथा ·····६९
अपदान ·····७३
बुद्धवंस·····७७
चरियापिटक ·····८१
जातक ·····८५
जातक-अट्ठकथा ·····८५
प्रस्तुत ग्रंथ ·····८६
बालोपयोगी जातक कथाएं·····८७
साधकोपयोगी जातक कथाएं·····८९
सुभाषित·····९०
अति ·····९१
अतीत-अनागत ·····९१
असत्पुरुष-सत्पुरुष·····९१
असत्यभाषण ·····९१

आयु-क्षय ·····९२
आर्य-अनार्य ·····९२
आशा-निराशा ·····९२
इच्छा-चक्र ·····९२
उद्योग ·····९२
एकता ·····९२
एकाकी विचरण ·····९३
कच्चा-पक्का ·····९३
कथनी-करनी ·····९३
कर्म ·····९३
क्रोध ·····९४
गुह्य अर्थ ·····९४
चिंतन ·····९४
जन्मों का क्षय ·····९४
तृष्णा ·····९४
त्राण ·····९५
दान ·····९५
दुर्बुद्धि ·····९५
दुःख ·····९५
देवता ·····९५
धर्म ·····९६
धर्माचरण ·····९६
नरक ·····९६
नारी ·····९६
नेता ·····९७
प्रज्ञावान ·····९७
प्रमाद-अप्रमाद ·····९७
प्रशंसा-निंदा ·····९७

प्रसन्न-अप्रसन्न ९७
प्रिय-अप्रिय ९८
पुरुष-स्त्री ९८
बीज-फल ९८
भोजन ९८
मन ९९
मनुष्य-जीवन ९९
मितभाषिता ९९
मित्रता ९९
मित्रद्रोह १००
मूर्ख १००
मूर्ख-पंडित १००
मृत्यु १००
मृत्युपरायणता १०१
याचक १०१
रुदन १०१
वाणी १०१
विशुद्धि १०१
विश्वास १०२
वैधव्य १०२
वैर १०२
शील १०२
श्रद्धा १०२
श्रमण १०३
श्रेष्ठता १०३
संकल्प १०३
संगत १०३
सज्जन १०३

संत ·····१०४
समझ·····१०४
समाधि·····१०४
सार ·····१०४
सुख - ·····१०४

महानिद्देस ·····१०५
अट्ठक वर्ग·····१०५
(१) कामसुत्त ·····१०५
(२) गुहट्ठकसुत्त ·····१०५
(३) दुट्ठट्ठकसुत्त ·····१०५
(४) सुद्धट्ठकसुत्त ·····१०६
(५) परमट्ठकसुत्त ·····१०६
(६) जरासुत्त ·····१०६
(७) तिस्समेत्तेय्यसुत्त ·····१०६
(८) पसूरसुत्त·····१०६
(९) मागण्डियसुत्त·····१०६
(१०) पुराभेदसुत्त ·····१०७
(११) कलहविवादसुत्त·····१०७
(१२) चूळवियूहसुत्त ·····१०७
(१३) महावियूहसुत्त ·····१०७
(१४) तुवट्टकसुत्त ·····१०७
(१५) अत्तदण्डसुत्त ·····१०७
(१६) सारिपुत्तसुत्त ·····१०८
निद्देस·····१०८
आगम से उद्धरण·····१०८
वैकल्पिक अर्थ एवं व्याख्याएं·····१०८
पर्यायवाची शब्द·····१०९

व्याख्या की पुनरावृत्ति एवं 'पेय्याल' १०९
प्रकार भेद १०९
निदान सहित व्याख्या ११०
सोदाहरण व्याख्या ११०
पद-निष्पत्ति ११०
साधना-पक्ष ११०
प्रकृत संदर्भों की आवृत्ति १११
चूळनिद्देस ११२
पारायन वर्ग ११२
खग्गविसाणसुत्त ११५
निद्देस ११६
आगम से उद्धरण ११६
वैकल्पिक अर्थ एवं व्याख्याएं ११७
पर्यायवाची शब्द ११७
व्याख्या की पुनरावृत्ति एवं 'पेय्याल' ११७
प्रकार भेद ११७
निदान सहित व्याख्या ११८
सोदाहरण व्याख्या ११८
पद-निष्पत्ति ११९
साधना-पक्ष ११९
प्रकृत संदर्भों की आवृत्ति ११९
अतिरिक्त विषयवस्तु ११९
पटिसम्भिदामग्ग १२१
१. महावग्ग १२१
(१) ञाणकथा १२१
(२) दिट्ठिकथा १२२
(३) आनापानस्सतिकथा १२२

(४) इंद्रियकथा १२२
(५) विमोक्खकथा १२२
(६) गतिकथा १२३
(७) कम्मकथा १२३
(८) विपल्लासकथा १२३
(९) मग्गकथा १२३
(१०) मण्डपेय्यकथा १२३
२. युगनद्धवग्ग १२४
(१) युगनद्धकथा १२४
(२) सच्चकथा १२४
(३) बोज्झङ्गकथा १२४
(४) मेत्ताकथा १२५
(५) विरागकथा १२५
(६) पटिसम्भिदाकथा १२५
(७) धम्मचक्ककथा १२६
(८) लोकुत्तरकथा १२६
(९) बलकथा १२६
(१०) सुञ्ञकथा १२६
३. पञ्ञावग्ग १२७
(१) महापञ्ञाकथा १२७
(२) इद्धिकथा १२७
(३) अभिसमयकथा १२७
(४) विवेककथा १२७
(५) चरियाकथा १२८
(६) पाटिहारियकथा १२८
(७) समसीसकथा १२८
(८) सतिपट्ठानकथा १२८
(९) विपस्सनाकथा १२८

(१०) मातिकाकथा १२९
नेत्तिप्पकरण १३०
प्रायोगिक पक्ष १३४
विशिष्ट पदों का विवेचन १३९
पेटकोपदेस १४१
मिलिन्दपञ्ह १४२
(१) बाहिरकथा (पुब्बयोगादि) १४२
(२) मिलिन्दपञ्ह (लक्खणपञ्ह) १४२
(३) मिलिन्दपञ्ह (विमतिच्छेदनपञ्ह) १४४
(४) मेण्डकपञ्ह १४५
(५) अनुमानपञ्ह १४८
(६) ओपम्मकथापञ्ह १४९

भूमिका

'सुत्तसार' में 'सुत्त पिटक' के सुत्तों का सार है।

भगवान बुद्ध की वाणी तीन पिटकों में सुरक्षित है – विनय पिटक, सुत्त पिटक तथा अभिधम्म पिटक। 'विनय पिटक' में अधिकतर भिक्षुओं-भिक्षुणिओं के लिए विनय का विधान है, 'सुत्त पिटक' में सामान्य साधकों के लिए दिये गये उपदेशों का संग्रह है और 'अभिधम्म पिटक' में विपश्यना साधना में खूब पके हुए साधकों के लिए गूढ़ धर्मोपदेश हैं।

बुद्ध-वाणी में 'सुत्त पिटक' का विशेष महत्त्व है क्योंकि सबसे अधिक सामग्री इसी पिटक में है और हर किसी के लिए उपयोगी भी। विपश्यना साधना सिखाते समय विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायण गोयन्काजी भी इसी पिटक के उद्धरण दे-देकर धर्म समझाते हैं। अभिधम्म पिटक समझने के लिए भी सुत्त पिटक को जानने की जरूरत होती है जैसे छत पर जाने के लिए सीढ़ी की।

सम्यक संबुद्ध की वाणी का एक-एक शब्द सारगर्भित होता है। उसमें से सार निकालना अपने आपको धोखा देना है। अतः किसी भी पाठक के मन में यह भाव कदापि नहीं जागना चाहिए कि सार की बातें छांट-छांट कर यहां प्रस्तुत कर दी गयी हैं और बाकी सब कुछ निःसार है।

यह 'सुत्तसार' सुत्तों का सार इस मायने में है कि सुत्त पिटक में जो कुछ वर्णित है उसका यह स्थूल रूप में अविकल (बिना अपनी ओर से कुछ जोड़े-तोड़े) प्रस्तुतीकरण है। इस सार की तुलना उस बयार से की जा सकती है जो रंग-बिरंगे, सुगंधित पुष्पों के बीच में से लांघ कर मात्र उनकी सुगंध अपने साथ हर ले जाती है। यह 'सुत्तसार' भी भगवान के चित्र-विचित्र, निर्वाण की गंध से सुवासित उपदेशों का एक हल्का-सा **परिचयमात्र** है।

वस्तुतः यह ग्रंथ कोई नयी कृति नहीं है। विपश्यना विशोधन विन्यास द्वारा मूल रूप में प्रकाशित 'सुत्त पिटक' के हर ग्रंथ के साथ उसमें सम्मिलित सुत्तों का सार उनमें दिया गया है। आचार्य श्री सत्यनाराणजी गोयन्का के आदेशानुसार

यह सार इसलिए तैयार किया गया था कि साधक पहले इन्हें पढ़ कर फिर सुत्तों को पढ़ें, तो इससे सुत्त और अधिक अच्छी तरह समझ में आने लगेंगे।

अब आचार्यश्री सत्यनारायणजी गोयन्का ने यह उचित समझा है कि यदि ये सभी सुत्तसार स्वतंत्र पुस्तक के रूप में प्रकाशित कर दिये जायँ तो एक अतिरिक्त लाभ यह होगा कि साधकगण जनभाषा के माध्यम से बुद्ध-वाणी को टुकड़ों-टुकड़ों में ही नहीं, बल्कि समग्र रूप से भी सुगमतापूर्वक समझने लगेंगे। आचार्यश्री के इसी चिंतन के फलस्वरूप यह कृति प्रस्तुत की जा रही है।

वर्तमान ग्रंथत्रय केवल सुत्तपिटक के सुत्तों का सार हैं जो कि पाठकों की सुविधा के लिए तीन भागों में प्रकाशित हो रहे हैं। इसके पहले भाग में दीघ एवं मज्झिम निकायों का, दूसरे में संयुत्त निकाय का और तीसरे में अंगुत्तर एवं खुद्दक निकायों का समावेश है।

जब सुत्तसार तैयार किये जा रहे थे, तब विपश्यना विशोधन विन्यास के उद्भट विद्वान डॉ. अंगराज चौधरी ने इनका निरूपण कर इनमें समुचित सुधार किये थे। इसके लिए मैं उनका अत्यंत आभारी हूं।

हमें विश्वास है कि इस कृति से विपश्यी साधकों को धर्म के अनेक अनजाने पक्षों की जानकारी मिलने के अतिरिक्त बुद्ध-वाणी को मूल रूप में पढ़ने की प्रेरणा भी मिलेगी।

सभी साधकगण के प्रति मंगल भावों सहित,

स. ना. टंडन

अङ्गुत्तरनिकाय

पहला निपात

इस निपात में सावत्थी में अवस्थित अनाथपिण्डिक के आराम जेतवन में भगवान बुद्ध के विहार करते समय उनके द्वारा एक-एक धर्म (विषय) को लेकर भिक्षुओं को दिये गये उपदेशों का मुख्यतया संग्रह है। कुछ उपदेश भगवान के प्रमुख शिष्यों द्वारा भी दिये गये हैं।

यह निपात अठारह वर्गों और दो पालियों में विभक्त है, जिनमें अनेक धर्मों के बारे में कहा गया है।

इनमें भगवान ने प्रज्ञप्त किया है कि

* ऐसा कोई एक भी रूप, शब्द, गंध, रस अथवा स्प्रष्टव्य नहीं है जो पुरुष के चित्त को इस प्रकार बांध ले जैसे कि स्त्री का रूप, शब्द, गंध, रस अथवा स्प्रष्टव्य। इसके विपरीत स्त्री के लिए भी सर्वाधिक बंधनकारक है पुरुष का रूप, शब्द, गंध, रस अथवा स्प्रष्टव्य।

* ऐसा एक भी धर्म नहीं है जो असंयत रहने पर इतना अनर्थकारक हो जाता हो जैसा कि यह चित्त। इसके विपरीत ऐसा एक भी धर्म नहीं है जो संयत होने पर इतना अर्थ सिद्ध करता हो जैसा कि यह चित्त।

* ऐसा एक भी धर्म नहीं है जो इतनी जल्दी बदलता हो जैसा कि यह चित्त। इसकी तो उपमा देना भी सहज नहीं है।

* जितने भी अकुशल अथवा कुशल धर्म हैं, वे सभी मन के पीछे चलने वाले हैं। मन उनमें पहले उत्पन्न होता है, और ये बाद में।

* यह जो सगे-संबंधियों का न रहना, अथवा भोग-सामग्री की हानि होना है, यह कोई बड़ी हानि नहीं होती। प्रज्ञा की हानि ही सबसे बड़ी हानि होती है। इसके विपरीत सगे-संबंधियों की वृद्धि, अथवा भोग-सामग्री की वृद्धि, यह कोई बड़ी वृद्धि नहीं होती। प्रज्ञा की वृद्धि ही सबसे बड़ी वृद्धि होती है।